विनोबा भावे – भूदान एवं शिक्षा दर्शन

शान्ति कुमार लखेड़ा*
अमित कुमार**

भारत भूमि को प्राचीन काल से ही ऐसे सन्त महर्षियों ने गौरवान्वित किया है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन निःस्वार्थ रूप से समाज को अर्पित कर दिया, उनके महान त्याग से देश ही नहीं बल्कि विश्व भी अचंभित है, चमत्कृत है। ऐसी ही कड़ी के संत थे– विनोबा भावे। उन्होंने निर्धन भूमिहीनों के लिये दान में भूमि मांगी और इस महान यज्ञ का नाम पड़ा– भूदान। विनोबा जी को महात्मा गाँधी का पुत्र भी कहा जाता है तथा गाँधीजी ने उन्हें अपना प्रथम सत्याग्रही भी चुना था।

जीवन परिचय

विनाबा भावे का जन्म सितम्बर 11, 1895 को महाराष्ट्र के कोलबा जिले के गागोदा ग्राम में हुआ था। इनका बचपन का नाम विनायक भावे था। माता-पिता के सादा जीवन, भक्ति-भावना तथा पवित्र आचरण का प्रभाव विनोबा जी पर पड़ना स्वाभाविक था। वे बाल्यकाल से ही सदाचारी तथा दृढ़ निश्चयी थे। सादगी इनके जीवन का पर्याय थी। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पूना एवं बड़ौदा में हुयी। गणित उनका सर्वाधिक रुचिकर एवं प्रिय विषय था उनकी तन्मयता एवं जिज्ञासु स्वभाव के कारण उनके पिता उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे। 1912 में विनोबा भावे ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की तथा इण्टर की परीक्षा की तैयारी में लग गये, किन्तु उनका मन पढ़ाई से भागने लगा तथा ब्रह्म जिज्ञासा की ओर अग्रसर होने लगा। सन् 1916 में उन्होंने अपनी माता के सामने अपने स्कूल के सारे प्रमाण-पत्र जला डाले और अपने जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ करने निकल पड़े।

विनोबा भावे कुशाग्र बुद्धि किन्तु स्वभाव से अध्ययनशील एवं परिश्रमी बालक थे, उन्होंने अपने हाईस्कूल के अध्ययन काल में ही बड़ौदा के विशाल केन्द्रीय पुस्तकालय की ज्ञानप्रद पुस्तकों का अध्ययन कर लिया था। इससे उनकी तीव्र अध्ययनशीलता एवं प्रबल ज्ञान पिपासा का परिचय भी स्वतः ही मिल जाता है। वे अपनी कक्षा

* *एसोसिएट प्रोफेसर*, शिक्षा विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल- 246147, उत्तराखण्ड
** *शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल- 246147, उत्तराखण्ड

में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होते थे, और अध्ययन के साथ-साथ खेलकूद, भाषण, वाद-विवाद तथा सामाजिक कार्यकलापों में भी व्यस्त रहते थे।

विनोबा भावे ने तन्मयता एवं रुचिपूर्वक मराठी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं का अध्ययन किया। उन्होंने महाराष्ट्र के संत साहित्य को कंठस्थ करने के साथ-साथ रामचरित मानस, विनय पत्रिका शंकराचार्य के ब्रह्मसूत्र भाष्य एवं श्रीमद्भागवत् गीता का गूढ़ अध्ययन किया। उपनिषदों, स्मृतियों तथा योग दर्शन का तत्वज्ञान भी उन्होंने प्राप्त किया। वे आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पद्यात्राओं के माध्यम से जनमानस में चेतना का संचार करना चाहते थे और इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु उन्होंने देश भर में भ्रमण कर भूदान, सर्वोदय, नवीन क्रान्ति जैसे आन्दोलनों का सूत्रपात किया।

आचार्य विनोबा प्राचीन काल की ऋषि परम्परा में आते हैं। उनका लक्ष्य आत्मकल्याण नहीं अपितु विश्व कल्याण था। उनके जीवन दर्शन का पूर्ण आधार गीता थी। स्वयं विनोबा के शब्दों में "मैं जो भी कार्य करता हूं और किया है वह सब गीता के आधार पर ही है, मेरा जीवन गीता के आधार पर ही खड़ा है।"

विनोबा भावे गाँधीजी के सान्धिय में

7 जून 1916 को बनारस प्रवास के दौरान विनोबा भावे की भेंट गाँधीजी से हुई और गाँधीजी के महान व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके संकेत पर वे उनके साथ साबरमती आश्रम में रहने लगे। साबरमती आश्रम से ही उन्होंने अपने राजनैतिक, सामाजिक जीवन का शुभारम्भ किया। गाँधीजी ने ही इनका नाम विनायक भावे से विनोबा भावे रखा जो कि विनायक तथा बाबा शब्द का मिश्रित रूप है। विनोबा भावे ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव समाज के कल्याण के लिये अर्पित करने का संकल्प किया। गाँधीजी के राजनैतिक आन्दोलनों में विनोबा भावे ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग लिया। 1921 में सत्याग्रह आन्दोलन के समय उन्हें जेल तक जाना पड़ा, 1930 के नमक-सत्याग्रह एवं 1932 के सत्याग्रह में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। 1932 में कारावास की कठिन अवधि में उन्होंने "गीता प्रवचन" नामक प्रसिद्ध पुस्तक का लेखन कार्य किया। गाँधीजी के कथनानुसार –"विनोबा आश्रम के उन गिने-चुने चन्द मोतियों में से है, ऐसे लोग आश्रम में कुछ लेने के लिए नहीं वरन देने के लिए आते हैं।"

विनोबा भावे ने 'पवनार' गाँव में 'सेवाग्राम' की तरह 'सर्वोदय आश्रम' की स्थापना की। इस आश्रम में स्वाध्याय, सदाचार, स्व-श्रम, सेवा समाज तथा शिक्षा सम्बन्धी नवीन प्रयोग किये गये। विनोबा जी ने 'नई तालीम' तथा 'समवाय' सम्बन्धी उपयोग यहीं पर किया और शास्त्रों एवं अन्य धर्मग्रन्थों का विवेचनात्मक अध्ययन किया। जिस प्रकार बापू सेवाग्राम के सन्त के नाम से विख्यात थे उसी प्रकार भावे पवनार के सन्त के नाम से प्रसिद्ध थे। विनोबा भावे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणीय आन्दोलनकारी भी थे। 1940-41 में गाँधीजी ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया तो विनोबा भावे की व्यक्तित्व प्रतिष्ठा को देखकर उन्हें ही अपना प्रथम सत्याग्रही होने का गौरव प्रदान किया।

विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन

विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन वेद-वेदान्त और गीता से प्रभावित है। उनके अनुसार इस जगत में ब्रह्म सत्य है और वह संसार में व्याप्त है, यह संसार ब्रह्म की स्फूर्ति है, प्रेरणा है। उस सत्य की खोज करना ही जीवन है और जीवन सत्य की खोज के

लिए है। उनकी दृष्टि में जीवन का लक्ष्य है- सत्य शोधनम्, सत्य की प्राप्ति के लिए नम्रता तटस्थता और अनाग्रह को अपनाना। उनके अनुसार सत्य से ही आत्मा परमात्मा का बोध हो सकता है और मनुष्य को सत्य असत्य का ज्ञान शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है।

विनोबा भावे कहते थे कि सत्य हमारे अंग-अंग में निहित है और असत्य वातावरण की देन है। जो कुछ मनुष्य के अन्दर है उसे बाहर लाना ही शिक्षा है और शिक्षा ही सत्य के यथार्थ स्वरूप को पहचानने की शक्ति प्रदान करती है। विनोबा भावे ने शिक्षा का अर्थ बताते हुए कहा है– "शरीर के हर अंग का पूर्ण एवं व्यवस्थित विकास, ज्ञानेन्द्रियों का चतुर, चपल और कार्यकुशल बनाना, मनोवृतियों, बौद्धिक शक्तियों एवं प्राकृतिक प्रवृतियों का सर्वांगीर्ण विकास ही शिक्षा है।"

विनोबा भावे का शिक्षा से तात्पर्य केवल इन्द्रिय विकास से नहीं है, क्योंकि उनकी दृष्टि में इन्द्रिय विकास तो पशुओं का भी होता है। वास्तव में शिक्षा से तात्पर्य ज्ञानेन्द्रियों पर नियन्त्रण करना है। उन्होंने सहज शिक्षा को त्रिसूत्रीय शिक्षा का नाम दिया है। उनके अनुसार "अपनी दृष्टि में शिक्षा के मुख्य तीन विषय हैं– एक है योग, दूसरा है उद्योग और तीसरा है सहयोग। विनोबा जी का योग से तात्पर्य आसन लगाना, व्यायाम करना नहीं था वरन् चित्त पर अंकुश रखना, चित्तेन्द्रिय बनना, मन पर काबू पाना, वाणी पर अंकुश लगाना आदि योग के सच्चे स्वरूप हैं। योगी के लिए निर्भय और सत्याग्रही होना आवश्यक है। शिक्षा का दूसरा अर्थ है-उद्योग। उद्योग से तात्पर्य उत्+योग=ऊँचा योग है और विनोबा जी के अनुसार जीवन में उद्योग और शिक्षा दोनों का समन्वय आवश्यक है। शिक्षा का तीसरा सूत्र है सहयोग। जो विश्व मानव की कल्पना पर आधारित है। यह भारतीय अखण्डता तथा स्वामी विवेकानन्द के विश्व बन्धुत्व की भावना को व्यक्त करता है। शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए विनोबा भावे लिखते हैं-"शिक्षा द्वारा हमें कोई स्वतंत्र तत्व उत्पन्न नहीं करना है।" अपितु बालक में निहित तत्वों को जाग्रत करना है। विनोबा जी ने शिक्षक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "राजनीति देश को तोड़ती है। देश को जोड़ने वाली दो शक्तियां हैं-एक किसान की शक्ति और दूसरी विद्वानों की शक्ति। शिक्षक का कार्य केवल स्कूल कॉलेजों में पढ़ाने तक सीमित नहीं रह जाता है अपितु उन्हें समाज से सम्पर्क कर समाज का मार्गदर्शक एवं पथ प्रदर्शक का काम भी करना चाहिए। जिससे शिक्षकों के अमूल्य ज्ञान भण्डार से बालक ही नहीं अपितु समाज भी लाभान्वित हो सके। विनोबा भावे तत्कालीन शिक्षा प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं थे, उनका कहना था कि जिस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद देश का झण्डा बदल दिया गया, उसी प्रकार शिक्षा के स्वरूप को बदल देना चाहिए। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। विनोबा भावे का कहना था कि शिक्षा में क्रान्ति लानी है तो शिक्षा के स्वरूप को बदलना ही होगा। शिक्षा को ग्रामों से प्रारम्भ करना होगा, गाँवों और देहातों में भी विज्ञान की शिक्षा को प्रारम्भ करना होगा। विद्यार्थियों को इसका अध्ययन कर ज्ञान शक्ति एवं गाँव की श्रम शक्ति का समन्वय करना होगा। इससे देश एवं समाज में शिक्षा की एक नई क्रान्ति पैदा होगी, जो समाज को एक नई दिशा भी प्रदान कर सकेगी। विनोबा ने सीखने की क्षमता को स्वयं इन शब्दों में व्यक्त किया-"मैं अपने जीवन में इन बातों को प्रधानता देता हूं, उसमें पहली है उद्योग, दूसरी बात जिसकी मुझे धुन है भक्ति मार्ग, तीसरी एक बात की और मुझे धुन है पर सबके काबू की वह चीज नहीं हो सकती है-वह है सीखना और सिखाना।"

विनोबा भावे का सर्वोदय

गाँधीजी ने सभी वर्गों के कल्याण हेतु रामराज्य की स्थापना की कल्पना की उसी प्रकार विनोबा भावे ने सर्वोदय समाज की स्थापना कर गाँधीजी की इस कल्पना को साकार किया। गाँधीजी ने सभी के समान रूप से कल्याण का उद्देश्य प्रस्तुत किया था न कि अधिक से अधिक व्यक्तियों के अधिकतम सुख का। उनके पदचिन्हों पर चलकर विनोबा भावे ने सेवाग्राम में सर्वोदय समाज की स्थापना की। सर्वोदय एक संगठन मात्र नहीं है अपितु एक क्रान्तिकारी विचार से प्रेरित है। सर्वोदय शब्द कुछ व्यक्तियों के उदय का प्रतीक नहीं, या फिर अधिक से अधिक व्यक्तियों के उदय का प्रतीक नहीं है अपितु इसमें गरीब-अमीर, ऊँच-नीच एवं अनपढ़-बुद्धिमान सभी के कल्याण की कामना की गई है। सर्वोदय सभी को हृदय से लगाने की उच्च विश्व बन्धुतत्व की भावना है। विनोबा जी के अनुसार सर्वोदय समाज एक ऐसा समाज है जिसमें मनुष्य जातिभेद, वर्गभेद, ऊंच-नीच इन सभी के बन्धन से मुक्त होकर आपसी भाईचारे के बीज बोते हैं।

समाज कल्याण मानव और मानव के मध्य हितों के टकराव पर आधारित नहीं होना चाहिए। व्यक्ति के विचारों में संकीर्णता एवं स्वार्थपूर्णता हो सकती है किन्तु सामाजिक चिन्तन में हितों का टकराव नहीं होना चाहिए। हमें पूंजी एवं भौतिक सुविधाओं के पीछे नहीं दौड़ना चाहिए अपितु हमें निजी स्वार्थ पर अंकुश लगाकर दूसरे के हितों की चिन्ता करनी चाहिए। जिससे सामाजिक सद्‌भावना एवं शान्ति को प्रोत्साहन मिल सके और इसी में सम्पूर्ण समाज का कल्याण निहित है। सर्वोदय का वास्तविक अर्थ है-सब का उदय। विनोबा जी का कहना था कि विश्व में व्याप्त हिंसक, संघर्ष हमें सर्वोदय की अवधारणा पर सोचने को विवश करते हैं। आज मानव जाति अन्तःकलह से जूझ रही है इस कलह का अंत हिंसक उपद्रव से नहीं होगा। भारत में आये दिन हिंसक उपद्रव होते रहते हैं, विशेषकर कश्मीर में। राजनैतिक दृष्टिकोण से सभी को भारतीय एकता बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए, इसमें कुछ हद तक सफलता भी मिल जाती है किन्तु जब तक मानसिक दृष्टि से एकता की स्थापना नहीं हो पायेगी तब तक राष्ट्रीय एकता एवं राजनीतिक एकता की कल्पना नहीं की जा सकती। इन सभी गम्भीर समस्याओं का समाधान विनोबा जी ने बताया है– सर्वोदय समाज की स्थापना। सर्वोदय ही समाज में राष्ट्रीय राजनैतिक एवं मानसिक एकता स्थापित कर सकती है।

विनोबा भावे का भूदान यज्ञ

विनोबा भावे ने गाँधीजी के विचारों को कार्यरूप में परिणित करने का जो उत्तरदायित्व अपने दृढ़ हाथों में लिया था, इसके लिए उन्होंने आजीवन अथक प्रयास किया। भूमिहीन हरिजनों का उद्धार, तेलंगाना कृषकों की समस्या का समाधान, नई तालीम, राष्ट्रभाषा, हिन्दी का प्रचार-प्रसार, कांचन मुक्ति, ग्रामदान, सम्पत्तिदान, सर्वसेवा संघ एवं गोवध निषेध आदि गुरुत्तर कार्य विनोबा भावे जी के अथक परिश्रम एवं त्याग का प्रतिफल है और इसी अथक परिश्रम एवं दृढ़ इच्छा शक्ति की अविस्मरणीय कड़ी है– भूदान यज्ञ। 1951 में आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में भूदान आन्दोलन प्रारम्भ किया। उस समय साम्यवादियों की असामाजिक गतिविधियां चरम सीमा पर थीं। रात के समय वे टोली बनाकर अमीर आदमियों की सम्पत्ति, फसल, अनाज आदि की लूटमार करते थे जिसे उन्होंने व्यवसाय बना लिया था। यह लूटमार करने वाले गरीब किसान

थे और लूटे जाने वाले धनी लोग, जमींदार अथवा साहूकार।

इन लुटरे गरीब किसानों का कहना था कि "हमारे पास खेती के लिए जमीन नहीं है और धनवान लोग हमसे काम कराकर थोड़ी सी मजदूरी देते हैं, इससे प्राण रक्षा के लिए चोरी ना करें तो क्या करें।" इस स्थिति में जमींदार लोग भयाक्रांत रहने लगे क्योंकि ये 'रात के राजा' इन्हें कभी भी लूट सकते थे। 18 अप्रैल 1951 को विनोबा भावे ने यह दर्द भरी कहानी पंचमपल्ली गाँव में जाकर कुछ भूमिहीन हरिजनों के मुंह से सुनी, इस गाँव की दुर्दशा का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता, कि यहां तीन हजार की आबादी वाले गाँव में से सिर्फ सात बच्चे स्कूल पढ़ने जाते थे। ताड़ी पीने का दुर्व्यसन पूरे समाज में व्याप्त था, ऐसे समाज का आपराधिक होना स्वाभाविक था। इस जटिल समस्या का समाधान कैसे किया जाए? इसके लिए विनोबा जी ने विचार किया कि एक अर्जी लिखकर इस समस्या पर सरकार से विचार-विमर्श किया जाए परन्तु अकस्मात् उन्होंने विचार किया कि क्यों न इस विषय पर गाँव वालों से चर्चा की जाए और जैसे ही विनोबा जी ने गाँव वालों के समक्ष अपनी बात रखी वैसे ही भीड़ में रामचन्द्र रेड्डी नाम का एक सज्जन खड़ा होकर बोला –"बाबा मेरे पिताजी की हार्दिक इच्छा थी कि मैं अपनी कुछ भूमि इन भाईयों में बाँट दूं परन्तु वे अब नहीं रहे। उनकी इच्छा पूरी करने के लिए मैं अपने पांच भाईयों की ओर से सौ एकड़ जमीन आप को भेंट करता हूं। आप इन हरिजन भाईयों को इस भूमि को भेंट करने की कृपा करें। इस प्रकार एक विशाल आन्दोलन का श्री गणेश हुआ। विनोबा भावे जी ने गाँव-गाँव घूमकर भूदान आन्दोलन का प्रचार-प्रसार किया और इसी का परिणाम था कि पवनार से दिल्ली की 62 दिन की यात्रा में उन्हें 19 हजार 436 एकड़ भूमि दान में मिली। इसके पश्चात् उन्हें उत्तर प्रदेश में 2,95,018 एकड़ भूमि, बिहार में 22,32,474 एकड़ भूमि, उड़ीसा में 2,57,277 एकड़ भूमि, आंध प्रदेश में 50754 एकड़ भूमि, केरल में, 1,571 एकड़ भूमि, तमिलनाडु में 47,092 एकड़ भूमि, तथा कर्नाटक में 1,109 एकड़ भूमि, पद्यात्रा करते हुए भूदान में प्राप्त हुई। भूदान में प्राप्त भूमि को विनोबा भावे गरीब, हरिजनों एवं निर्धन किसानों को भेंट स्वरूप प्रदान करते थे। विनोबा भावे का तर्क था कि "मैं जमीन माँगता नहीं हूँ क्योंकि मैं भीख नहीं माँगता। अपितु यह भूमि उन गरीबों का हक है जिसे मैं उन्हें लौटा रहा हूँ।" वास्तव में माँगने में, दान ग्रहण करने में हीनता की भावना पैदा हो जाती है और इससे मानव की मानवता को भी धक्का लगता है। इस प्रकार विनोबा जी भूमिहीनों के आत्मसम्मान को उच्च बनाये रखना चाहते थे यही कारण है कि उन्होंने "दान नहीं गरीबों का हक" का नारा भूदान आन्दोलन में दिया। जिससे कि गरीबों की भावनाओं को आघात न पहुंचे।

विनोबा भावे ने भूदान आन्दोलन से अनगिनत गरीबों को भूमि दान में दी, परन्तु रुपया-पैसा, धन-दौलत नहीं, भूदान के पीछे विनोबा भावे जी का भाव था कि गरीब मजदूर इस भूमि पर मेहनत करके अपना भरण-पोषण कर सकते हैं। जिससे वे मेहनती एवं कर्मठ बनेंगे। इसके विपरीत पैसा, धन-दौलत आदि मनुष्य को दुर्व्यसनी एवं आलसी बना सकता है।

गाँव की लक्ष्मी गाँव में

गाँवों की दुर्दशा देखकर विनोबा जी दु:खी होते थे, उन्होंने गाँवों में भ्रमण कर गाँव की जनता को नशा एवं दुर्व्यसन से मुक्त रहने की शिक्षा दी और आपसी झगड़ों को मिटाकर एक सूत्र में संगठित

होने की प्रेरणा दी। विनोबा जी ने कहा कि "गाँवों का विकास हो सकता है परन्तु जब वह गाँव की लक्ष्मी गाँव में रहने दे"। पलायन और गाँव की सम्पत्ति को गाँव में रोकने का विनोबा जी ने पंचसूत्र का विचार दिया– शादी ब्याह, बाजार, व्यसन, साहुकार और सरकार।

विनोबा जी कहते थे कि गाँव वाले शादी ब्याह में हैसियत से ज्यादा खर्च करते हैं, यहां तक कि कर्जा निकालकर खर्च किया जाता है और शादी के बाद कर्ज वापस करते-करते उनकी आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है, इस अपव्यय को रोका जाना चाहिए। इसका बेहतर उपाय यह है कि शादी ब्याह का खर्चा सम्पूर्ण गाँव वाले मिलकर वहन करें, इससे शादी का बोझ व्यक्ति विशेष पर अधिक नहीं पड़ेगा, इसका एक लाभ यह होगा कि गाँव में शान्ति, सौहार्द एवं आपसी भाईचारे की जड़ें और मजबूत होंगी।

हम खेतों में कपास, गन्ना, तिल, मूंगफली, सरसों आदि पैदा करते हैं परन्तु दुर्भाग्यवश गुड़, कपड़ा बाजार से खरीदते हैं, बस अब इतना ही बाकी रह चुका है कि अनाज भेजकर बाजार से रोटी खरीदना। ग्रामवासियों के निर्धन होने का सबसे बड़ा कारण है अपना उत्पाद बाजार को बेचते हैं। यद्यपि औजार बाहर से मंगवाने पड़े परन्तु यह सामग्री गाँव में ही निर्मित होनी चाहिए। शहर की वस्तुओं का निर्माण गाँव में करो और गाँव की ही खरीदो।

हर गाँव की व्यवस्था इस प्रकार निर्मित हो कि वह हरा-भरा गोकुल नजर आये। ग्वाल-बाले हष्ट-पुष्ट तंदुरुस्त हों, मेहनती हों, सब एक-दूसरे से प्यार करते हों। ईख का कोल्हू चल रहा हो, चरखा कत रहा हो, धुनिया धुन रहा हो, तेल का कोल्हु चूं-चूं बोल रहा हो, कुंए पर मोट चल रही हो, ग्वाला बंशी बजाते हुए गायें चरा रहा हो, ऐसा गाँव बनने दो, यही मेरे सपनों का गोकुल और गाँव के विकसित स्वरूप का सूत्र है।

विनोबा भावे जी ने गाँव में दुर्व्यसनों को समाप्त कर उनमें आपसी सौहार्द बढ़ाने पर बल दिया और इन सभी सूत्रों पर यदि गाँव वाले विचार कर गाँव की लक्ष्मी को बाहर न जाने दें तो सरकार स्वत: ही जाग जायेगी। परिणामस्वरूप गाँव खुशहाल समृद्ध एवं विकसित होते चलेंगे। वास्तविक रूप में विनोबा जी ने गाँव व गाँव वालों को सही अर्थ में समझने का प्रयास किया। सच्चे अर्थ में लक्ष्मी गाँव में ही रहती है-लहलहाते हुए खेतों में, झुकी हुई पेड़ की डालियों में, दूध दुहाते ग्वालों की गौशालाओं में, और खेतों में काम करते किसान की खुरपियों में, वास्तविक रूप में भारत की लक्ष्मी और शक्ति यहीं रहती है।

भूदान के अतिरिक्त विनोबा जी ने ग्रामदान, सम्पत्तिदान, श्रमदान आदि आन्दोलनों को जनमानस से जोड़ने का प्रयास किया और इसमें वे सफल भी रहे। इनके कुशल नेतृत्व क्षमता का ही प्रतिफल है कि ये सभी आन्दोलन इतिहास के पन्नों पर अमिट छाप छोड़ने में सफल रहे। विनोबा भावे चाहते थे कि लोकतंत्र की शक्ति जनता के हाथ में हो और सत्ता की शक्ति का प्रयोग जनहित में एवं प्रजा को सबल एवं स्वावलम्बी बनाने में किया जाए। वे जनता को स्वालम्बी बनाकर उन में अपनी शक्ति को पहचानने की शक्ति विकसित करना चाहते थे।

उद्योग-व्यवसाय सभी सार्वजनिक हों एवं उन पर जनता का आधिपत्य हो। वे प्रत्येक को उसकी योग्यता एवं श्रम के अनुसार वेतन देने की व्यवस्था को व्यर्थ मानते थे। उनका कहना था कि किसी रोगी की तन्मयता से सेवा करने वाले डॉक्टर, निष्पक्ष भाव से न्याय करने वाले न्यायधीश, कुशलता से शिक्षण करने वाले प्रभावशाली शिक्षक आदि की सेवाएँ जो अमूल्य हैं, का वेतन निर्धारण

करना न्यायचित नहीं है। वेतन निर्धारण की बात किये बिना विनोबा जी का कहना था कि व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण शक्ति एवं योग्यता से समाज की सेवा करे और समाज उस व्यक्ति के भरण पोषण का उत्तरदायित्व निवर्हन करे। इस प्रकार विनोबा जी समाज में सामूहिक उत्तरदायित्व, अहिंसा और विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना चाहते थे।

गाँधीजी के अंहिसा के सिद्धान्त के विनोबा जी बड़े उपासक थे गाँधीजी ने घृणा, क्रोध, असत्य आदि को जीतने के लिए प्रेम शान्ति एवं सत्य के मार्ग का अनुसरण करने का उपदेश दिया और इसी विचारधारा को विनोबा भावे ने आजीवन आत्मसात् करने का प्रयास किया। उनका कहना था कि विश्व के देश आपस में जितने समीप आ रहे हैं, उनमें अविश्वास उतना ही अधिक पैदा हो रहा है। विज्ञान के ज्ञान ने सम्पूर्ण विश्व को एक भौगोलिक ईकाई के रूप में निरूपित कर दिया है, परन्तु विज्ञान ने हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के विनाश का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया हैं। हिंसा, घृणा एवं एक–दूसरे के प्रति अविश्वास में वृद्धि हो रही है, जो एक दिन सम्पूर्ण मानव जाति को निगल जायेगा और इस विनाश को रोकने का मार्ग है–प्रेम एवं अंहिसा। विनोबा जी महात्मा बुद्ध के उपदेशों पर अमल करने को कहते थे। उनका कहना था कि गीता में भी प्राणी मात्र से घृणा न करने का संदेश है। यही एकमात्र मार्ग है–मानव कल्याण एवं शान्ति का।

विनोबा भावे के अनुसार 'हिंसा का सिद्धांत' मूर्ख एवं बर्बर व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाने वाला एक घातक हथियार है, जिससे मानव का विनाश निश्चित है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिंसा पर आधारित बड़े से बड़े साम्राज्य एक के बाद एक हिंसा की आधी में रेत के टीलों की तरह बिखर गये। हिंसा पर आधारित साम्राज्य सफल एवं चिरस्थायी नहीं होता फिर भी लोग हिंसा का मार्ग अपनाकर उसकी सफलता के लिए आशान्वित रहते हैं। हिंसा निरन्तर बढ़ने वाले नशे की तरह है और हिंसा के उत्तर में प्रतिहिंसा युद्ध के मैदान तक पहुंचा देती है। जहां पानी की नहीं रक्त की नदियां धरती को सींचती हैं। जबकि अहिंसा दूसरे को समाप्त नहीं करती अपितु एक–दूसरे के दिल में समा जाती है। एक की सफलता में दूसरे की सफलता देखने का मार्ग प्रशस्त करती है। अंहिसा से परिपूर्ण जीवन, त्याग और बलिदान मे आनन्द का अनुभव करता है, इस आनन्द की अनुभूति अशोक जैसे महान सम्राट को राजमहल में नहीं अपितु कलिंग युद्ध में हुए विशाल नरसंहार के बाद हुई, जब अशोक ने अंहिसा का मार्ग अपनाकर जनसेवा के लिए अपना साम्राज्य समर्पित कर दिया था अर्थात् अंहिसा में वह शक्ति एवं आनन्द है जो मानव जाति को राजमहल में भी प्राप्त नहीं हो सकती।

विनोबा जी ने अपना पूरा जीवन देश एवं समाज को अर्पित कर दिया था उनका स्मरण हर भारतीय को गौरव से करना ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली होगी।

संदर्भ

नागर, पुरुषोत्तम, 2003, *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.

सिंह, श्याम, 2009, शिक्षा दर्शन, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली.

शर्मा, प. श्रीराम, 2009, संत विनोबा भावे, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा.

www.vinobabhave.org.

www.bhoodhanmovement.com.